अगस्त २०१३

कीमत रु १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

लोभ को नहीं रोक!

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : ५
अखंड क्रमांक : ५
जुलाई २०१३

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डोलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादाजी कहते हैं...

लोभ अर्थात् अपने पास पर्याप्त सबकुछ हो, फिर भी ऐसा भीतर चलता रहे, "और ज्यादा इकट्ठा करें, और प्राप्त करें" तो उसे लोभ कहते हैं। ज़रूरत होने पर उसे प्राप्त करना उसे लोभ नहीं कहते लेकिन ज़रूरत का सबकुछ है फिर भी लगे, "और अधिक लें" तो वह लोभ। जैसे कि एक अच्छा स्कूल बैग हो फिर भी ऐसा लगे, "दूसरा ले आएँ" तो वह लोभ है!

दूसरे को देखकर लगता है, "यह खुद की चीज़ें सँभालकर रखता है तो इसके पास अभी कितनी सारी चीज़ें हो गई हैं। यह तो मज़े कर रहा है।" इसलिए फिर खुद भी सँभालकर रखना और इकट्ठा करना शुरू कर दे तो लोभ की शुरूआत हो गई। उसने ऐसा मान लिया है कि इकट्ठा करके रखूँगा तो उसे सुख मिलेगा और फिर दुःख कभी भी नहीं आएगा, लेकिन वह सँभालने से और इकट्ठा करते रहने से लोभी बन जाएगा। उदा. नई ड्रेस लेने के बाद भी पुरानी ड्रेस अलमारी में रहने दें, ज़रूरतमंद को नहीं दें। ऐसा सोचते हैं कि अदल-बदल कर पहन सकेंगे लेकिन दो-तीन सालों में एक बार भी वह ड्रेस नहीं पहनी हो, फिर भी देने का मन नहीं करें अर्थात् वह दूसरे को देखकर खुद लोभी बन गया।

प्रश्नकर्ता : लोभ की गाँठ तोड़ने के लिए क्या करें?

दादाश्री : लोभ की गाँठ तो जब भयंकर नुकसान आए या औरों के लिए इस्तेमाल करे तो टूटती है। भयंकर नुकसान यानी कि यह चींटी, खाना इकट्ठा करने में जबरदस्त लोभी होती है। वह पूरे दिन चीनी का दाना, अनाज का दाना या खाने की चीज़ों का अपने गोदाम में इकट्ठा करती ही रहती है। पंद्रह साल तक चले, इतना इकट्ठा कर लेती है, लेकिन अंत में क्या होता है? एक दिन चूहा आकर पूरे वर्ष की कमाई साफ कर देता है! लोभी की भी ऐसी ही हालत होती है।

औरों के लिए इस्तेमाल करें तो भी लोभ की गाँठ टूटती है। कई लोग खुद के लिए खर्च नहीं करते लेकिन औरों के लिए खर्च करते हैं, वे संत कैटिगॅरी में आते हैं। उन्हें कभी भी दुःख नहीं आता। दुःख किसे आता है? जो खुद के लिए ही खर्च करते हैं। इसलिए लोगों के सुख के लिए खर्च करना। जब से देना सीखे, तभी से मोक्ष की तरफ मुड़ता है।

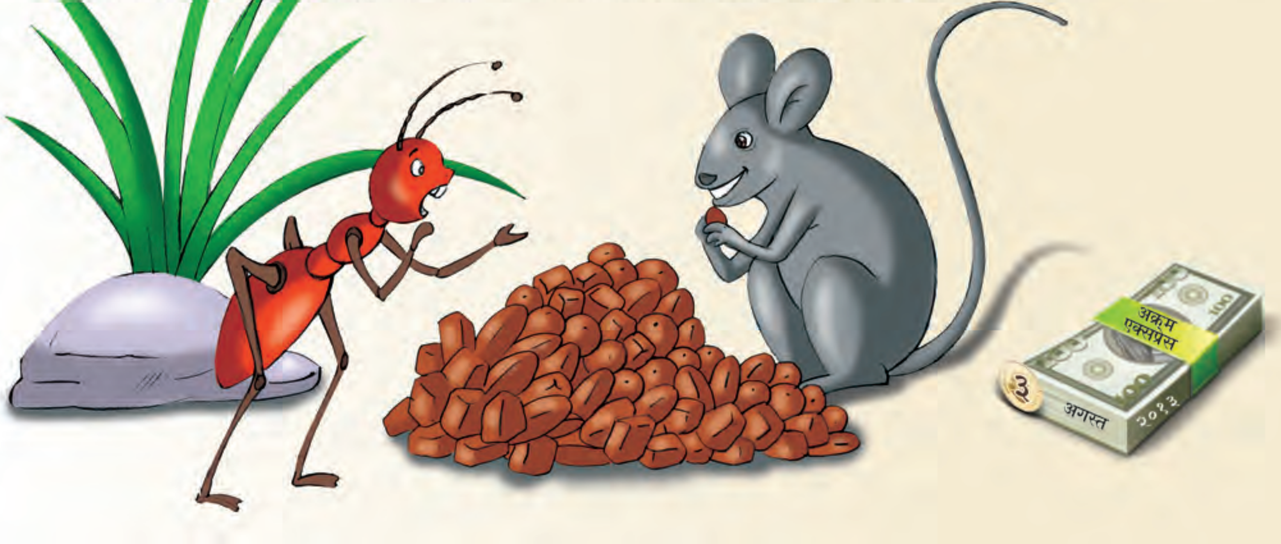

मैं व्यापार करता था, उसमें मैंने अपने पार्टनर के साथ एक नियम तय किया था। यदि मैं नौकरी कर रहा होता, तब मुझे जितना वेतन मिलता, उतना ही पैसा मुझे घर खर्च के लिए देना है। उससे अधिक नहीं देना है।

- दादा भगवान

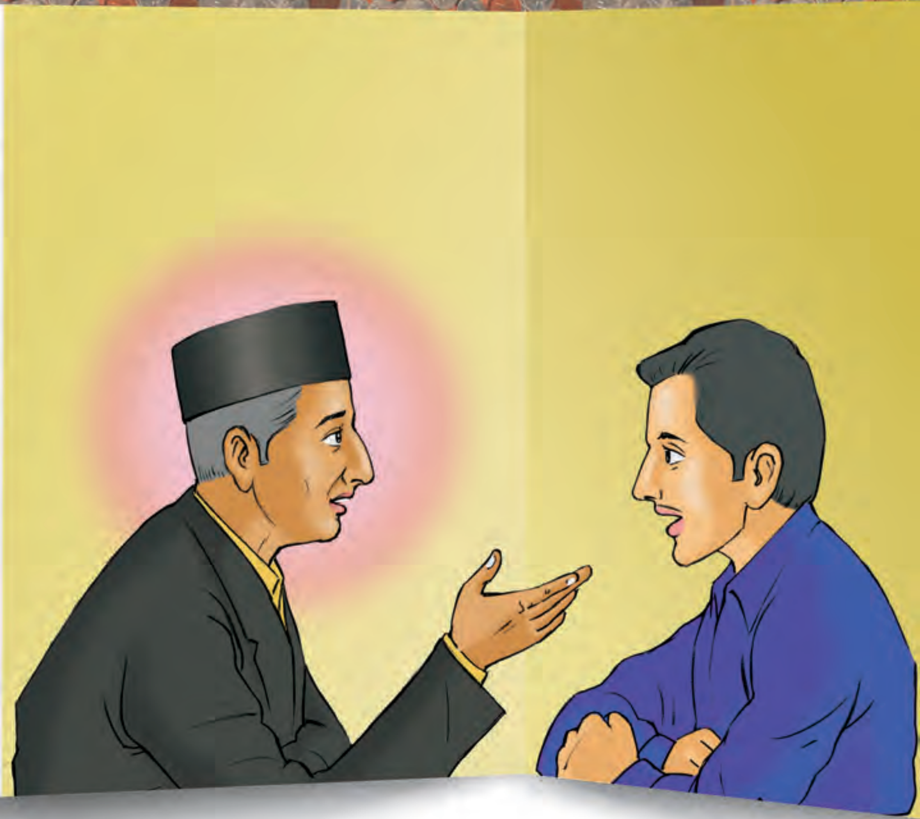

लोभ का अर्थ क्या? दूसरों का छीन लेना। जैसे कि, अपने पास और पैसा आए ऐसा लगे, लेकिन अपने पास आएगा कैसे? किसी दूसरे के पैसों में से कम होकर ही आएगा न? इसे दूसरे का छीन लिया कहा जाएगा।

मनुष्यपन, वह महान सिद्धि है, उसे हर एक चीज़ मिल जाती है। तुम्हें कितना घी, कितना तेल, कितनी सब्ज़ी, कितना दूध मिलेगा, इन सभी का हिसाब तुम्हारे साथ "जोइन्ट" ही है। इसीलिए ये सब चीज़ें मिलती हैं, वर्ना किसीको नहीं मिलता, श्रीमंतो को भी नहीं मिलता।

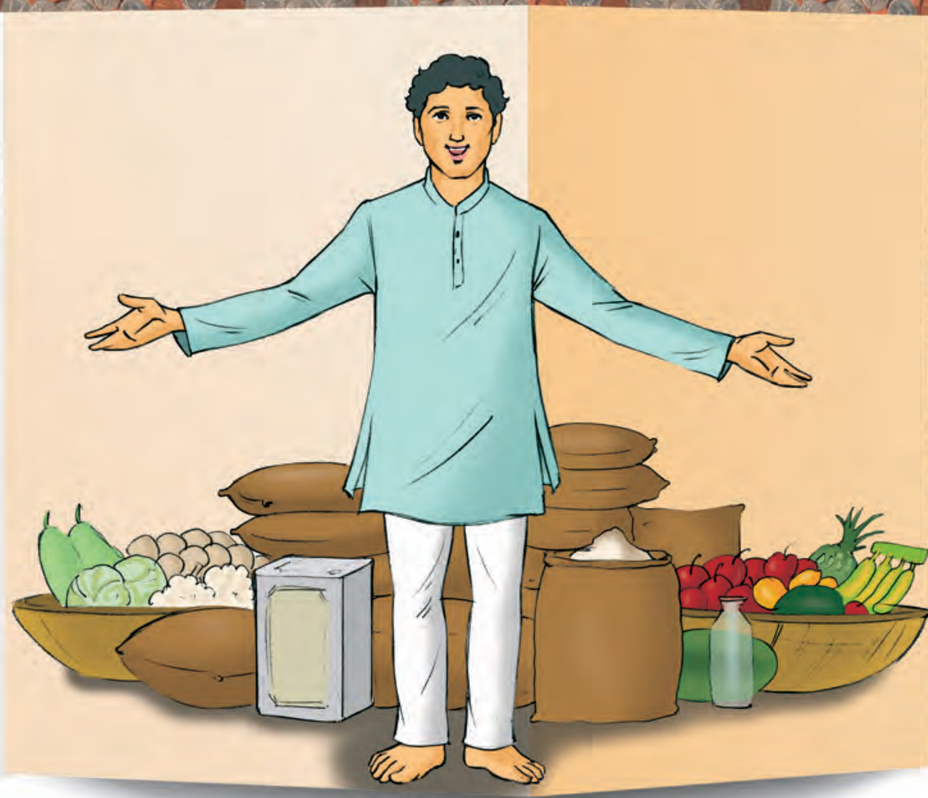

नई ही बात!

संतोष कब उत्पन्न होता है? जब खुद भीतर से संतुष्ट होता है तब। फिर उसके सामने सोने का ढेर रखें, तो भी उस पर असर नहीं होता।

अद्भुत गुफा

कई सालों पहले की बात है। माधवपुर नाम के गाँव के पास एक प्राचीन गुफा थी। गाँव के लोगों को गुफा के सही स्थान का पता नहीं था लेकिन लोगों में ऐसी मान्यता थी कि यह ऐसी एक मायावी गुफा है, कि जिसमें तरह-तरह के हीरे-माणिक और ज़ेवर गड़े हुए हैं। गाँव के कुछ लोगों ने गुफा खोजने का बहुत प्रयत्न किया लेकिन वे असफल हुए।

एक दिन जब संध्या का समय था। आकाश में सूरज डूबने से पहले की लालिमा थी। श्याम चरवाहा अपनी बकरियों को चराकर वापस घर लौट रहा था। इतने में समूह में से एक बकरी चरते-चरते गुफा की तरफ पहुँच गई। गुफा तो चारों ओर से छोटी-बड़ी बेलों और वृक्षों से ढँकी हुई थी। बकरी के पीछे-पीछे श्याम भी गुफा के अंदर चला गया और वहाँ का दृश्य देखकर वह तो चकित ही रह गया।

प्रत्येक दिशा में हीरा, माणिक, सोना, चांदी के ज़ेवरो का ढेर था। उसकी खुशी का पार नहीं रहा। "किस तरह से ये सारा खज़ाना पा लूँ", ऐसी उधेड़बुन श्याम के मन में चलने लगी। उसने सोचा, "गुफा छोड़कर जाऊँगा तो मूर्खता कहलाएगी। इसलिए आज से मैं खुद ही गुफा की और उसके अंदर के खज़ाने की रक्षा करूँगा।"

उसके बाद वह रात-दिन गुफा की रक्षा करने में लग गया। गुफा के बाहर उसने अपना डेरा डाल दिया। किसी को गुफा के रहस्य का पता न चले इसके लिए उसने सभी सगे-संबंधियों से संपर्क कम कर दिया। खज़ाने को रखने के लोभ में श्याम इतना अंधा हो गया कि उसने खुद के स्वास्थ्य पर भी ध्यान नहीं दिया। दिनोंदिन उसकी तबियत बिगड़ने लगी।

एक दिन, भरी दोपहर में भूखा-प्यासा श्याम गाँव में खाना लेने के लिए निकला। वहाँ हलवाई की दुकान के पास उसे गाँव के बुजुर्ग तुलसीभाई मिले। श्याम की हालत देखकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ।

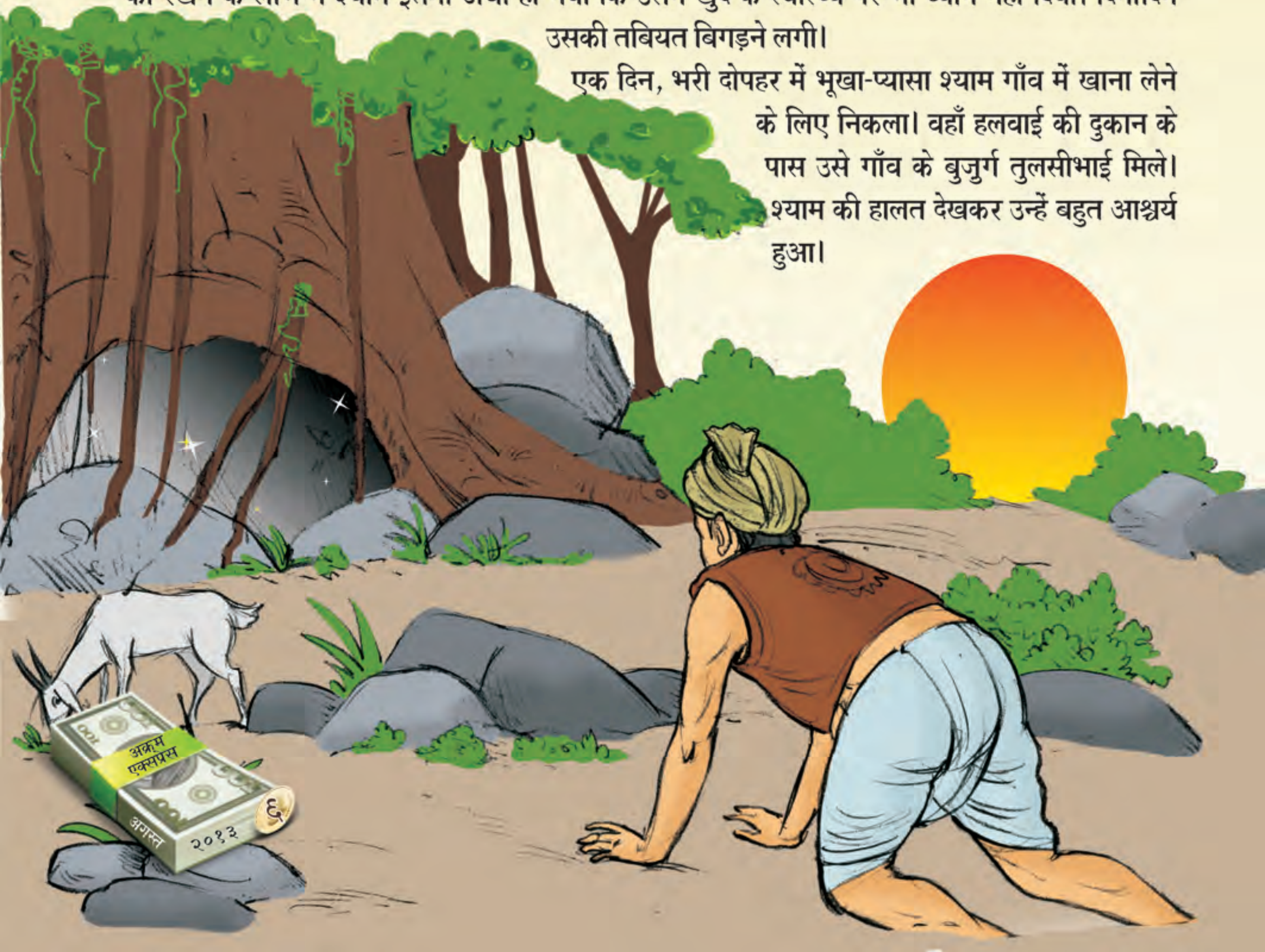

बहुत प्यार से उन्होंने पूछा, "भाई, यह तुने क्या हालत बना ली है? चल मेरे घर, साथ में खाना खाएँगे और बातें करेंगे।" श्याम ने आनाकानी की पर तुलसीभाई तो माने ही नहीं। अंत में आग्रह करके वह श्याम को अपने घर ले ही गए।

भोजन के बाद तुलसीभाई ने धीरे से पूछा, "भाई, कामकाज तो ठीकठाक चल रहा है न? इतना कमज़ोर कैसे हो गया?" तुलसीभाई के प्रश्न से श्याम थोड़ा शर्मिंदा हो गया। थोड़ा हिचकिचाते हुए बोला, "आजकल थोड़ा ज्यादा काम कर रहा हूँ। इसके कारण शरीर थोड़ा दुबला हो गया है। सोचता हूँ कि बुढ़ापे में तकलीफ न पड़े इसलिए अभी मेहनत करके ज्यादा धन कमा लूँ तो अच्छा होगा।"

"बात तो तेरी सही है। लेकिन ऐसा कमाया हुआ किस काम का कि भोगने के लिए तेरा शरीर ही ठीक न रहे? कई बार हमारे पास पर्याप्त धन होते हुए भी ज्यादा मिलने की लालच में सबकुछ खो देते हैं।"

श्याम को तुलसीभाई की बात में रुचि नहीं थी, उसे तो ऐसी बेचैनी अंदर ही अंदर हो रही थी कि कब यहाँ से निकलूँ और कब गुफा के पास पहुँच जाऊँ। लेकिन तुलसीभाई तो खटिया पर पालथी मारकर बातें करने बैठ गए थे। छाछ का एक घूँट पीया और हँसकर बोले, पहले मुझे भी इकट्ठा करने की आदत हो गई थी। कैसे मैं ज्यादा प्राप्त करूँ, यही मेरे दिमाग में घूमता रहता था। तभी मेरे पिताजी ने मुझे गाँव में हुई एक घटना बताई और तुलसीभाई ने तो उस घटना का वर्णन करना शुरू कर दिया...

"एक किसान था। खाता-पीता सुखी परिवार का था। एक बार उस किसान ने एक जमींदार के आश्चर्यजनक सौदे की बात सुनी। सौदा ऐसा था कि दिन के हज़ार रुपये देकर जितनी ज़मीन लेनी हो उतनी ले सकते हैं। किसान को सौदे की बात सुनकर आश्चर्य हुआ। वह तो ज़मींदार के पास पहुँच गया। आश्चर्य से उसने पूछा, "एक दिन की कीमत हज़ार रुपये मतलब क्या?"

ज़मींदार ने कहा, "एक दिन में तुम जितना चलोगे उतनी ज़मीन तुम्हारी लेकिल शर्त इतनी ही है कि सूर्यास्त होने तक तुमने जिस सीमा से चलना शुरू किया हो उस सीमा पर वापस आ जाना पड़ेगा, नहीं तो तुम्हारे दिए हुए हज़ार रुपये भी खो दोगे।"

किसान को तो यह सौदा बहुत लाभदायक लगा। सूर्योदय होते ही जमींदार को हज़ार रुपये देकर वह तो निकल पड़ा। दोपहर तक तो काफी दूर चला। "अब वापस लौट जाऊँ" ऐसा मनमें विचार आया। लेकिन और ज्यादा ज़मीन प्राप्त करने के लोभ के कारण वह लौट न सका। "अभी और थोड़ी ज़मीन ले लूँ। कोई मूर्ख ही इतनी अच्छी ज़मीन हाथ से जाने देगा" ऐसा सोचकर आगे चलता गया।

सूरज उसके सिर पर था। बहुत ही गरमी के कारण वह पसीने से लथपथ हो गया था। आराम करने का सोचा लेकिन लोभ के कारण उसने वह विचार छोड़ दिया और चलता ही रहा। उसके पैर में छाले पड़ने लगे। हृदय की धड़कन भी बढ़ गई, प्यास के कारण उसका मुँह सूखने लगा। सूर्यास्त के थोड़े समय पहले वह वापस लौटा। अब उसके शरीर में बिल्कुल भी ताकत नहीं बची थी, जैसे-तैसे करके वह चल रहा था। सूर्यास्त के कुछ क्षणों पहले ही वह प्रयाण की सीमा के पास आ गया। वहाँ खड़े हुए लोगों ने तालियों से उसका स्वागत किया। जैसे ही वह सीमा पर पहुँचा कि वह ज़मीन पर गिर गया। उसके मुँह से खून निकलने लगा और कुछ ही क्षणों में उसकी मृत्यु हो गई।

ऐसा दुःखद अंत सुनकर श्याम को आघात लगा। तुलसीभाई ने अपने अनुभव की बात करते हुए आगे कहा, "यह बात बताकर मेरे पिताजी ने मुझे लोभ की पकड़ में से

छुड़वाया और तभी से मुझे संतोष के धन की कीमत समझ में आ गई।"

तुलसीभाई की बातों का श्याम पर बहुत ही असर हुआ। तुलसीभाई का आभार मानकर श्याम गुफा की ओर निकल गया।

जब श्याम गुफा में खज़ाना लेने गया तो एकदम दंग ही रह गया। गुफा के अंदर का सारा खज़ाना गायब हो गया था। केवल एक नीलमणि का टुकड़ा ही वहाँ बचा था। श्याम सोच में पड़ गया, "मैं तो थोड़े ही समय के लिए बाहर गया था, इतने कम समय में इतना सारा खज़ाना कैसे, कोई ले जा सकता है? ये सारा खज़ाना कहाँ गायब हो गया होगा?"

उसे तुलसीभाई की बात याद आ गई। वह सोचने लगा, "मेरी हालत भी उस किसान जैसी ही हो गई है। जिस खज़ाने की रक्षा

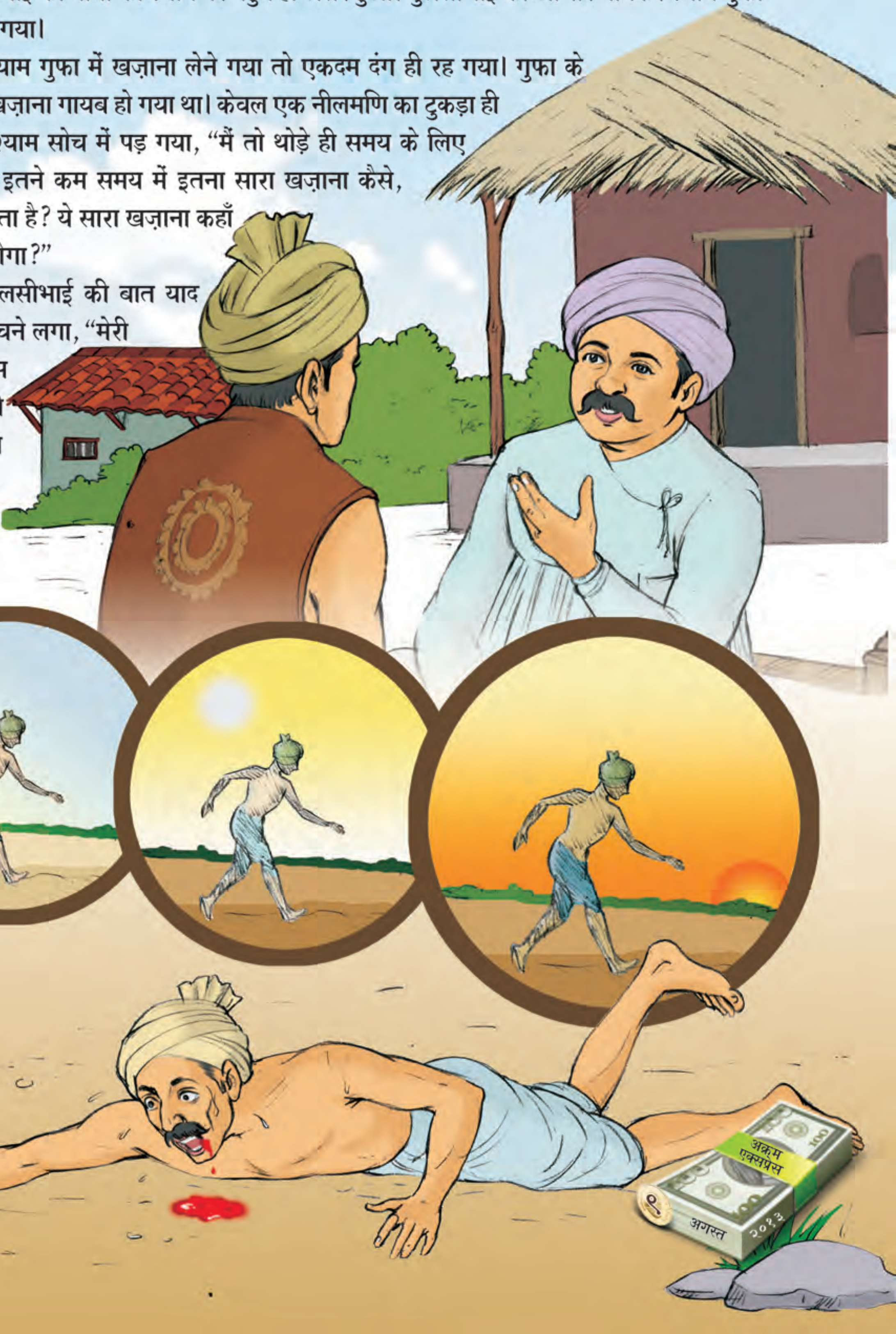

मैंने निरंतर की, वह खज़ाना तो मेरे किसी काम में ही नहीं आया। जो खज़ाने को संग्रह करने के लोभ में मेरा आनंद चला गया, मेरा स्वास्थ्य बिगड़ गया, मैं मेरे मित्र और सगे-संबंधियों से दूर हो गया। ऐसा खज़ाना मेरे क्या काम का?"

बहुत सोचने के बाद श्याम ने नीलमणि के टुकड़े को लेकर नक्की किया कि जो भी पहला व्यक्ति मुझे मिलेगा उसे यह टुकड़ा दे दूँगा। इसी तरह से मैं मेरे लोभ को तोड़ सकूँगा। गुफा के बाहर वह नीलमणि लेकर निकला कि उसे एक वृद्ध स्त्री नज़र आई। ज़रा भी सोचे बिना नक्की किए अनुसार तुरंत ही नीलमणि का टुकड़ा श्याम ने उस वृद्ध स्त्री को दे दिया। घर जाने से पहले अंतिम बार श्याम ने गुफा में झाँका तो वह फिर दंग रह गया। वहाँ सोने के सिक्कों का ढेर पड़ा था। उसने अपनी आँख मसली और आँखे फाड़कर देखा, श्याम के आश्चर्य का ठिकाना नहीं था। उसे अचंभा हुआ कि यह तो कैसी मायावी गुफा है कि जिसमें से खज़ाना अपने आप प्रकट होता है और गायब भी हो जाता है? तय किए अनुसार श्याम ने सोने के सिक्कों की पोटली बाँधी और किसी को पता नहीं चले इस तरह एक गरीब आदमी की झोंपड़ी में रख आया।

ऐसा थोड़े दिन चला और धीरे-धीरे श्याम को समझ में आया कि जैसे-जैसे वह खज़ाने में से देता जाता है वैसे-वैसे खज़ाना बढ़ता जाता है! लेकिल इस चमत्कार का रहस्य उसे समझ में नहीं आया।

उसी दौरान तुलसीभाई से उसकी फिर मुलाकात हुई। श्याम को तंदुरस्त देखकर वे खुश हो गए लेकिन श्याम की उलझन उनसे छुपी न रह सकी। श्याम से उन्होंने उलझन का कारण पूछा तभी श्याम ने गुफा का अनुभव व्यक्त किया।

यह सुनकर तुलसीभाई मन ही मन हँस पड़े, फिर उन्होंने श्याम को गुफा का संपूर्ण रहस्य विस्तार से सुनाया.....

इस गुफा का नाम है, "हज़ार खज़ाने की गुफा।" तुम्हारे पहले भी कई लोग इस गुफा की माया और लोभ में फँस चुके हैं। लेकिन भाई, तू ही ऐसा पहला व्यक्ति है कि जो इस गुफा के खज़ाने के मायाजाल से, उसके लोभ से सफलतापूर्वक बाहर निकल सका। गुफा के रहस्य के पीछे का इतिहास यह है कि सालों पहले एक ऋषि ने इस गुफा में बहुत तप किया था और गुफा को वरदान दिया था कि इस गुफा में तभी तक खज़ाना रहेगा जब तक किसी को इस खज़ाने का लोभ नहीं रहेगा, यदि लोभ होगा तो खज़ाना धीरे-धीरे कम होता जाएगा।

उसके बाद बहुत समय तक खज़ाने में कमी नहीं आई। खज़ाने के कारण माधवपुर की समृद्धि तो बढ़ी, लेकिन श्याम तो संतोष के धन को ही अपनी सच्ची कमाई मानकर जिया और अपना पूरा जीवन परायों के लिए बिताया।

फँसाव

वन में आज वानर उत्सव मनाया जा रहा था। तरह-तरह के फलों और वनस्पतियों की दावत थी।
मदनिया, खाना कितना लुभावना लग रहा है! सोचता हूँ क्या खाऊँ और क्या नहीं!
चिम्पू जितना ले सकता था, उतना सब ले लिया। केला, सेब, अमरूद, मोसंबी, संतरा....
दावत है इसलिए खाना तो खाऊँगा ही न! लेकिन मैं जितना खा सकता हूँ उतना ही लिया है।
अरे, आज तो जितना खाना हो उतना खाने की छूट है।
छूट भले ही हो, लेकिन मैं तो इतना ही खा पाऊँगा। मैं उस पेड़ के नीचे बैठा हूँ। तुझे जो कुछ लेना है, वह लेकर वहाँ आ जाना।
चिम्पू ने तो पेड़ के नीचे सभी फल और वनस्पतियों का ढेर लगा दिया और शांति से खाने बैठा। थोड़ी देर बाद,
सचमुच हं ... ओई..या...मेरा पेट तो बहुत भर गया।
वाह! मज़ा आ गया! कितना मज़ेदार है!

चल, अब हम अपने दोस्तों के साथ खेलने चलते हैं।
इतनी जल्दी? मेरा तो सिर्फ पेट ही भरा है, मन नहीं भरा। अभी तो कितने फल चखने बाकी हैं। जितना खाना हो उतना खाने की छूट है, याद है न तुझे?
लेकिन चिम्पू, खाने की छूट है तो इसका मतलब ऐसा नहीं है कि बिना भूख के भी खाते रहें। संतोष जैसा कुछ है या नहीं? मैं तो चला खेलने।
लेकिन चिम्पू को अभी तक संतोष नहीं हुआ था। वह तो फिर से अपने लिए ढेर सारा खाना ले आया और खाता ही गया।
थोड़ी देर बाद,
चिम्पू, ओ चिम्पूड़े... हम सब एक मज़ेदार खेल, खेल रहे हैं। जल्दी आ।
लेकिन, चिम्पू को तो बोलने का भी होश नहीं था।
सब कितने मज़े कर रहे हैं और मुझे कितनी भयंकर तड़फड़ाहट हो रही है। मैंने थोड़ा कम खाया होता तो?!
तभी, दूर से कुछ बंदरों की चीखें सुनाई दीं।
भागो भागो...वन में शिकारी आए हैं कईयों को तो पकड़ भी लिया है।
सभी बंदर भयभीत होकर इधर-उधर भागने लगे। शंभू काका वृद्ध लेकिन अक्लमंद थे। वे घनी झाड़ियों में छुप गए।

भरे हुए पेट के कारण चिम्पू जल्दी से भाग नहीं सका, वह घबरा गया। तभी उसने चने से भरी हुई मटकी देखी। वह नज़दीक जा ही रहा था कि तभी...
चिम्पू, उसमें हाथ मत डालना।
लेकिन इसमें चने हैं।
नहीं, नहीं, वापस आ जा। अपने लालच के कारण ही शिकारियों की युक्ति काम करती है।
युक्ति...?
हाँ, ये शिकारी बहुत चालाक होते हैं, वे मटकी में चने रखते हैं। हम लोग लालच से मुट्ठी भरकर चने निकालने जाते हैं लेकिन भरी हुई मुट्ठी की वजह से हाथ फँस जाता है, मुट्ठी नहीं खोलते इसलिए हाथ बाहर नहीं निकाल पाते। और अंत में पकड़े जाते हैं।
थोड़े कम लेते तो नहीं फँसते, लेकिन मुट्ठी भरी तो क्या हो? यह तो लालच का फँसाव है! है न?
चिम्पू क्या कहता? शरम से नीचे देखने लगा। आज उसने भी तो फँसाव की तड़फड़ाहट का स्वाद चखा था न! उस दिन से वह ज़रूरत से ज्यादा लेना भूल गया।

अक्रम एक्सप्रेस

Happy Birthday

गुजराती अक्रम एक्सप्रेस को ५ साल पूरे हुए... इस अवसर पर चलो देखते हैं रिस्पोन्स की एक झलक...

अक्रम एक्सप्रेस पढ़ने में सचमुच बहुत ही मज़ा आता है। उसमें दी गई कहानियाँ, जोक्स आदि में कई बार दूसरे बच्चों को भी स्कूल में सुनाता हूँ। मनोरंजन और ज्ञान का खजाना मतलब अक्रम एक्सप्रेस। अक्रम एक्सप्रेस का मैं उत्सुकता से इंतज़ार करता हूँ। मेरी एक नम्र विनती है कि अक्रम एक्सप्रेस हर महीने में एक ही बार आती है तो अगर संभव हो तो दो बार आएँ, ऐसी मेरी इच्छा है क्योंकि हम इसे जल्दी से पढ़ लेते हैं।

मैंने सभी अक्रम एक्सप्रेस संभालकर रखी हैं और फाइल बनाई है। और मुझे उन्हें बार-बार पढ़ना भी अच्छा लगता है। अक्रम एक्सप्रेस की कहानियाँ मैं मम्मी-पापा को भी पढ़कर सुनाता हूँ। आई लव माय अक्रम एक्सप्रेस।

दादाजी अपनी हर एक गलती को सुधार देते हैं। हमें हमेशा बड़ों का मान रखना चाहिए। वे मुश्किलों में हमेशा हमें सही मार्ग दिखाते हैं। हमें भी उनकी बातों को मान लेना चाहिए। दादाजी भी हमें अच्छे संस्कार देते हैं। सही-गलत की समझ देते हैं। हमारे समाज में ऐसे कई लोग है कि जो यह अक्रम एक्सप्रेस नहीं पढ़ सकते। मेरे जैसे छोटे-बड़े हर एक मित्रों को मैं विनती करता हूँ कि आप अक्रम एक्सप्रेस के साथ जुड़ जाए और दूसरों को जुड़ने के लिए प्रेरणा दें। अक्रम एक्सप्रेस पढ़ना, संभालना, समझना या दूसरों को पढ़ने के लिए भी ज़रूर देना चाहिए।

सचमुच अक्रम एक्सप्रेस पढ़ने से हमारे जैसे छोटे बच्चों के जीवन में ज़रूर से परिवर्तन ला सकता है। मेरा पसंदीदा मैगज़ीन है, अक्रम एक्सप्रेस। अक्रम एक्सप्रेस वह मेरा सबसे बेस्ट फ्रेन्ड बन गया है।

आगम ऋषभभाई संघवी
उम्र : ८ साल,
अहमदाबाद

समग्र दादा परिवार को हनी का जय सच्चिदानंद। मुझे अक्रम एक्सप्रेस पढ़ना बहुत ही अच्छा लगता है। जिस तरह मम्मी-पापा दादावाणी और दीपकभाई के सत्संग का इंतज़ार करते हैं, उसी तरह अक्रम एक्सप्रेस और बच्चों की शिविर कब आएगी, उसका मैं भी इंतज़ार करती रहती हूँ। अक्रम एक्सप्रेस में मुझे - दादा कहते हैं, मीठी यादें, मेरी बातें और पज़ल बहुत ही अच्छे लगते हैं।

हनी ठक्कर
उम्र : १० वर्ष
कलिया(वासणा)

जय सच्चिदानंद,

मैं मेरा अक्रम एक्सप्रेस का अनुभव बताना चाहती हूँ। अक्रम एक्सप्रेस में से मुझे यह सीखने मिला कि, हमें किसीको दुःख नहीं देना चाहिए। यदि गलती से भी दुःख दे दिया गया तो माफी मांग लेनी चाहिए। और प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए। हमें बड़ों का विनय रखना चाहिए। इस तरह मुझे अक्रम एक्सप्रेस में से बहुत कुछ सीखने मिला। और अक्रम एक्सप्रेस से मेरे जीवन में कई बदलाव आए हैं। पहले मैं मेरे गुरु का बहुत नेगेटिव बोलती थी, लेकिन अक्रम एक्सप्रेस पढ़ने से मुझे पता चला कि गुरु का कभी भी नेगेटिव नहीं बोलना चाहिए। इस तरह से मेरे जीवन में कई बदलाव आएँ। इसी तरह अक्रम एक्सप्रेस छपती रहे ताकि मैं और अधिक पा सकूँ।

सिंगाडा हेपी अरविंदभाई
१३ साल,
सीमंधर सिटी

Dear (Akram Express) Editor

Jay Sachitanand,

I like reading Akram Express.

By the way, I have a suggestion for you. You may know that all of us have many difficulties, problems and habits to deal with, so if there was a column in the book in which we can write our difficulties and have the right guidance by you it would be great! So we can find the right ways to deal with our problems.

I really like all stories, puzzles and Questions-Answers with Pujyashree. Akram Express is amazing! Keep up the good work!!!

Parita H. Patel
age : 11 year
Anand

हर एक मास में आनेवाली अक्रम एक्सप्रेस मैगज़ीन जैसे मुझे ही संबोधित करके आती हो, ऐसा लगता है। हर एक बात में जैसे दादा मुझे ही मैंगज़ीन द्वारा हेल्प करने आते हो, वैसा लगता है। धीरे-धीरे मेरी समझ बढ़ती जा रही है, ऐसा लगता है। और अब जो मैं बताना चाहती हूँ, वह यह है कि..

मेरी मम्मी मुझे बहुत अच्छी लगती है क्योंकि वह मुझे अच्छा-अच्छा खाना बनाकर प्रेम से खिलाती है। मुझे जो पसंद है, वह सब मम्मी बनाती है। जब कभी भी मम्मी मुझ पर गुस्सा हो जाती थी और मुझे मारती भी थी, तब पहले मुझे मम्मी की ही गलती दिखती थी। लेकिन इस मैगज़ीन के सभी अंक पढ़कर मुझे धीरे-धीरे समझ में आने लगा है कि इसमें मम्मी की गलती नहीं है क्योंकि कई बार मैं ही गलती करके आती हूँ और मेरे भाई के साथ छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा करके मम्मी के सामने गलत शिकायत करती हूँ तो मम्मी मुझे ही मारेगी न। जो अब मुझे समझ में आ रहा है। पहले मुझे मेरी गलती दिखती ही नहीं थी। मम्मी की ही गलती दिखती थी। अब मुझे मेरी मम्मी पहले से भी ज्यादा अच्छी लगती है।

यदि पाँच-सात अंक पढ़कर ही मुझे इतनी समझ मिलती हो तो ऐसे ज्यादा से ज्यादा अंक पढ़कर मुझमें बहुत ही समझ ज़रूर बढ़ जाएगी। अब मुझे दादा, नीरू माँ भी बहुत अच्छे लगते हैं और दीपकदादा तो बहुत ही अच्छे लगते हैं।

पापा मुझे नीरू माँ के फोटो में दिया हुआ वाक्य बताते हैं "प्रेम थी रहेजो... प्रोमीस?" मैं पापा को कई बार प्रोमीस दे चुकी हूँ लेकिन मैं प्रोमीस का पालन नहीं कर पाई। लेकिन इसके लिए मैं दादा भगवान से, नीरू माँ से, दीपकदादा से प्रोमीस पालन करने की शक्ति माँगूँगी।

ऐसी समझ हमारे जैसे छोटे दिमाग को यदि कोई मैगज़ीन द्वारा होती है तो वह एक अक्रम एक्सप्रेस ही है। "अक्रम एक्सप्रेस इज़ वन ऑफ द बेस्ट मैगज़ीन इन ऑल मैगज़ीन।"

"नॉर्थ एन्ड साउथ, इस्ट एन्ड वेस्ट, अक्रम एक्सप्रेस इज़ द बेस्ट"

हिनल राणा
उम्र : १०
साल वासद

जय सच्चिदानंद,

मेरा नाम रीचा गज्जर है। मैं अहमदाबाद में रहती हूँ और सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे अक्रम एक्सप्रेस से बहुत कुछ सीखने को मिलता है। मार्च महीने की अक्रम एक्सप्रेस में से मुझे अद्‌भुत ही अनुभव हुआ। मुझे मेरी मम्मी पढ़ाई करने से पहले "दादा भगवान का असीम जय जयकार हो" करने के लिए कहती थीं, लेकिन मैं नहीं बोलती थी। पर जब मैंने अक्रम एक्सप्रेस में पढ़ा कि पढ़ाई करने से पहले दस मिनट "दादा भगवान का असीम जय जयकार हो" बोलने से चित्त एकाग्र होता है। फिर उस दिन मैं "दादा भगवान का असीम जय जयकार हो" बोलकर पढ़ाई करने के लिए बैठी और दूसरे दिन स्कूल में जब हमें सवाल पूछे गए तब मुझे सभी सवाल के जवाब आ गए। हमेशा जब मैं तीन-तीन बार पढ़ती थी तभी याद नहीं रहता था। उस दिन तो मैंने एक ही बार पढ़ा था तो भी मुझे याद रह गया। उस दिन मुझे सवाल का जवाब जैसा दिया था, वैसा दिख रहा था। मुझे इस बार की अक्रम एक्सप्रेस बहुत ही अच्छी लगी।

रीचा गज्जर,
अहमदाबाद

Jai Sat Chit Anand

I get very pleased after reading Akram Express. I am about to finish my Inter Science and each edition gives me more strength and understanding to become sincere and work hard with full positivity for my studies

My favourite section?..it is "Sweet Memories"

The examples, stories and satsang tidbits are so helpul and a "vitamin for the spirit"!

Also, you stick to the main topic throught the book which i really like!..and sometimes i wonder how you finish such a cumbersome task of pubilishing Akram Express every month! it is truely remarkable!..It is my deep inner intent that may it become a weekly magazine!

I hope these words encourage you to perform even better and would be very obliged to help you as well!

Keep up the good work!

Nikhil Tiwari,
Dubai

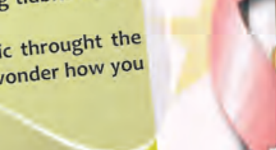

ऐतिहासिक गौरवगाथाएँ.....

अलकापुरी समी कौशाम्बी नगरी में विशाखादत्त नाम के प्रतिष्ठित धनी रहते थे। जितने धनी उतने ही धार्मिक थे। जितना उनका व्यापार व्यवहार अच्छा चलता था, उतना ही संसार व्यवहार भी अच्छा चलता था। कुटुंब, जाति और समाज में उनकी प्रतिष्ठा और गौरव की चर्चाएँ होतीं थीं और लोग उनका उदाहरण भी देते थे।

समय और काल भी अपना काम करते ही हैं। सूर्य उदय होता है तो फिर अस्त भी होता है! इसी तरह सेठ का नसीब भी बदला। व्यापार में नुकसान होने से, धनी विशाखादत्त धनहीन बन गए, विशाखादत्त सोचने लगे, "अब कौशाम्बी में रहना मुश्किल है। पुरानी इज्जत और लोकलाज के कारण परिश्रम करके जीवन बिताना भी नहीं हो पाएगा।" अब कौशाम्बी में जीवन व्यतीत करना बहुत मुश्किल हो गया था। इसलिए परिवार की आजीविका की व्यवस्था करने के लिए, परदेश जाने का उन्होंने निश्चय किया। परदेश जाने का निर्णय तो ले लिया, पर जाएँ कहाँ? वज्रकर नामक गाँव हीरे की खान के लिए प्रसिद्ध था। कई लोग वहाँ जाकर अपना भाग्य अजमाते थे। यह बात विशाखादत्त को मालूम थी, इसलिए वे वहाँ पहुँच गए। वज्रकर पहुँचकर तुरंत ही उन्होंने हीरा खोदने का परिश्रम शुरू कर दिया। पूरे दिन की मेहनत के बाद मुश्किल से पेट भरे उतना ही मेहनताना मिलता था। फिर भी वे हताश नहीं हुए। सिर्फ पुरुषार्थ और परिश्रम में उन्हें विश्वास था।

एक दिन उनका दिवाकर नामक बाबाजी से परिचय हुआ, वे हीरों की परख और खोज विद्या के लिए प्रसिद्ध थे, योगी दिवाकर की धीरे-धीरे विशाखादत्त के साथ संगत बढ़ने लगी।

विशाखादत्त की नम्रता, विनयशीलता और धर्मप्रियता से प्रभावित होकर दिवाकर उनकी ओर विशेष लगाव दिखाने लगे। एक दिन दिवाकर ने भावुक स्वर से विशाखादत्त से कहा, "मैं तुम्हारा यह हीरा खोदने का कठिन परिश्रम नहीं देख सकता, हमें इसका हल निकालना चाहिए।"

विशाखादत्त बोले, "योगीराज! मेहनत और भाग्य के साथ के बिना कुछ भी नहीं मिल सकता। इसलिए

निराश और दुःखी होने का क्या अर्थ है? भाग्योदय होने तक तो परिश्रम करना ही पड़ेगा न! अन्य कोई रास्ता हो तो कृपा करके बताइए, मैं तैयार हूँ।"

दिवाकर ने उत्तर देते हुए कहा, "हाँ, मेरे पास ऐसा मार्ग है जिससे तुम्हें ऐसी मज़दूरी नहीं करनी पड़ेगी। मैं तुम्हारी नम्रता और धर्म पालन से प्रसन्न हूँ। मेरी विद्या सिद्धि से तुम्हारे जैसे धर्मात्मा का कल्याण करके उसका सद्उपयोग करना चाहता हूँ। मेरे गुरु से मुझे "धरणीकल्प" नाम की विद्या प्राप्त हुई है। इस विद्या से मैं यह जान सकता हूँ कि पाताल में कहाँ क्या है।"

विशाखादत्त उनकी बात ध्यान से सुन रहे थे, दिवाकर ने अपनी चमत्कारी बातें जारी रखते हुए कहा, "यहाँ से तीन कोस दूर एक कात्यायनी चंडिका का मंदिर है। उनके आँगन की ज़मीन में पाँच करोड़ जितना सोने का कुबेर का भंडार गड़ा हुआ है। पूजा-अर्चन से देवी को प्रसन्न करके खज़ाना, मैं आपको देना चाहता हूँ।"

यह सुनकर विशाखादत्त की आँखें चमकने लगीं। धन-भंडार के दृश्यों में उनका चित्त खो गया। फिर भी वे बोल उठे, "योगीराज! इस भंडार की जानकारी होते हुए भी अभी तक आपने वह क्यों नहीं ले लिया।" दिवाकर ने तुरंत जवाब दिया, "यदि वह खज़ाना मैं खुद के लिए या किसी अधर्मी के लिए इस्तेमाल करूँ तो मेरे गुरु के कथन अनुसार मेरी यह "धरणीकल्प" विद्या लुप्त हो जाएगी, अब तुम्हारे जैसे धर्मिष्ठ पुरुष से मेरी खोज़ पूरी हो गई। यह धन भंडार तुम्हें सौंपकर मैं इस ज़िम्मेदारी से मुक्त होना चाहता हूँ।"

यह बात सुनकर विशाखादत्त की सभी शंकाएँ दूर हो गईं। अब वह सुख- समृद्धि के सपने देखने लगा। लोभ और लालच से वह अंधा हो गया। दिवाकर ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "अब इस खज़ाने की प्राप्ति में देर नहीं लगानी चाहिए। कात्यायनी चंडिका देवी को प्रसन्न करने के लिए पूजा की सामग्री की सूची देता हूँ।

सूची के अनुसार सब सामग्री लेकर तुम मध्यरात्रि में मंदिर के दरवाज़े पर पहुँच जाना। अब हम वहीं मिलेंगे।

खुशी-खुशी विशाखादत्त पूजन का सामग्री लेकर सही समयपर मंदिर के मुख्य द्वार पर पहुँच गया। दिवाकर उसका इंतज़ार करते हुए खड़े ही थे।

"पूजा का समय हो गया है। अब हमें काम जल्दी पूरा करना चाहिए। तुम मंदिर में जाकर पूजा शुरू करो। मैं यहाँ दरवाज़े के पास बाकी की विधि पूरी करता हूँ।"

विशाखादत्त ने मंदिर में प्रवेश किया। मंदिर का दृश्य देखकर वह स्तब्ध रह गए। उन्हें विचार आया, कहाँ समस्त विश्व का कल्याण करनेवाली शक्ति स्वरूप देवी और कहाँ ये पशु और नर की बलि लेनेवाली कात्यायनी चंडिका? ऐसी हिंसक देवी की मैं पूजा करूँ? धन के लालच में मैं यह क्या करने तैयार हो गया हूँ? मेरे संस्कार में तो यह ज़रा भी नहीं आता। इससे तो अच्छा मैं भला और मेरी दरिद्रता भली।

फिर तो जैसे उनके पीछे शेर पड़ा हो वैसे विशाखादत्त मंदिर के बाहर दौड़े और दिवाकर से हाँफते हुए कहने लगे, "दिवाकरजी! आप तो मुझसे कैसी देवी की पूजा करवाना चाहते हैं? ऐसा अधर्म और पाप करवाना चाहते हैं? लेकिन इसमें आपका क्या दोष? मैं ही धन के लालच में अंधा हो गया था किन्तु अब मेरी आँखें खुल गई हैं। मैं सिर्फ धर्म के मार्ग पर ही चलूँगा। अब हमेशा के लिए अपने मार्ग अलग होते हैं।" यह बात सुनकर दिवाकर लाल-पीला हो गया!

लेकिन मुख्य बात यह थी : दिवाकर ने कात्यायनी चंडिका देवी को एक नर-बलि चढ़ाने की प्रतिज्ञा की थी, इसीलिए विशाखादत्त को मीठी-मीठी बातों में फँसाकर उसकी बलि चढ़ानी थी। दिवाकर विकराल मुँह बनाकर डरावने स्वर से दहाड़ा, "पाँच करोड़ का सोने का भंडार क्या रास्ते में पड़ा है कि

निकल पड़े लेने के लिए! बलि चढ़ाओगे तो माल मिलेगा और हे मूरख! मैं तेरी बलि चढ़ाकर खज़ाना लूँगा। तेरा अंत समय आ गया है। तुझे जिसे याद करना हो उसे कर ले और मरने के लिए तैयार हो जा" ऐसा कहकर दिवाकर ने एक धारदार छुरी विशाखादत्त की तरफ की।

विशाखादत्त को दिवाकर का असली रूप और अपनी मौत को सामने देखकर आँखों के सामने अंधेरा छाने लगा। अत्यंत भयभीत होकर अपनी असमय मृत्यु की राह देखने लगा। दिवाकर ने विशाखादत्त की तरफ छुरी करके एक अंतिम प्रयास से हाथ को झटका दिया। लेकिन यह क्या! हाथ हिल ही नहीं रहा था। फिर प्रयत्न किया पर हाथ नहीं हिला! विशाखादत्त और दिवाकर दोनों चकित हो गए। देखा तो दिवाकर का हाथ एक बलवान और सौम्य युवक ने अंतिम क्षण में पकड़ लिया था और फिर तो दिवाकर को सीधा करके उसकी पूरी योजना धूल में मिला दी।

यह दृश्य देखकर विशाखादत्त उस नवयुवक के चरणों में गिर गया। "महा उपकार आपका कि आपने मेरी जान बचाई।"

नवयुवक बोल उठा, "महानुभाव! आपकी जान बचाकर, आज मैंने भी एक महादोष के प्रायश्चित का अंश पूरा किया है। इसलिए आपका भी मैं उतना ही उपकार मानता हूँ, और मैं भी आपका कृतज्ञ हूँ।"

नवयुवक ने बात चालू रखते हुए कहा, "आप हीरे की खान खोजने के लिए यहाँ वहाँ भटक रहे हो, मैं आपको शाश्वत हीरे की खान बताने आया हूँ, जो आपके भीतर, आपके हृदय में ही है। बाहर के हीरे तो सिर्फ दुःख ही देंगे, लेकिन हृदय में जो धर्म रूपी, ज्ञान रूपी, प्रेम रूपी, और करूणा रूपी हीरे की खान है उसे खोजें और शाश्वत सुख के हीरे को पाएँ!"

यह सुनकर विशाखादत्त युवक के चरणों में झुक गए।

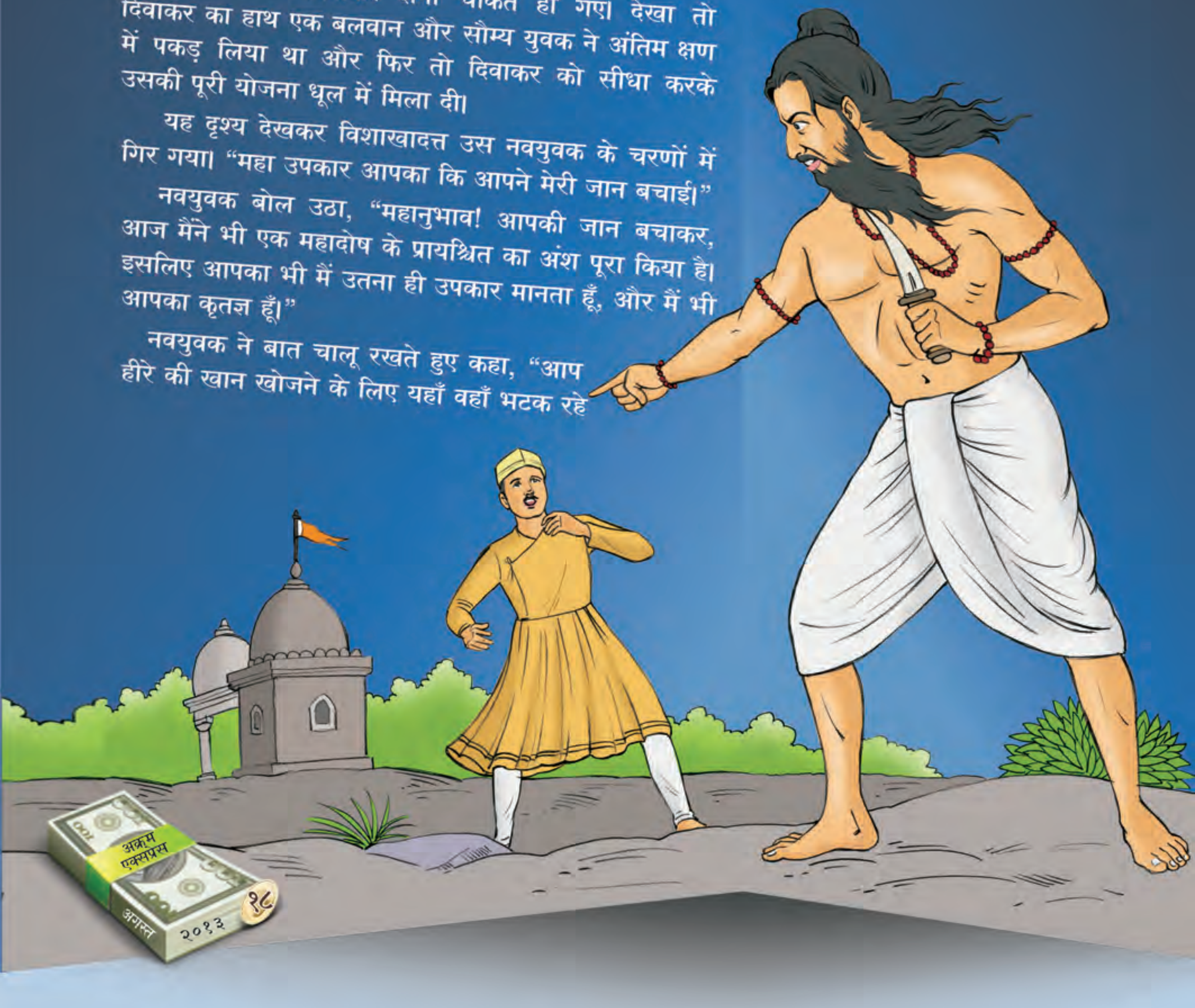

मीठी यादें

एक बार राजकोट में, परम पूज्य दादा भगवान की जन्म जयंती मनाई जा रही थी। गाँव-गाँव से इतने सारे महात्मा और दर्शनार्थी आए थे कि जैसे मनुष्यों की बाढ़ आ गई हो ऐसा लग रहा था! जन्म जयंती के दिन पूज्य नीरू माँ प्रत्येक को दर्शन दे रही थीं। सभी महात्मा लाइन से दर्शन कर रहे थे।

एक ब्रह्मचारी बहन पूज्य नीरू माँ के पास सेवा के लिए खड़ीं थीं। दर्शनार्थी पूज्य नीरू माँ के पैर छूकर दर्शन कर रहे थे, बहन को लगा कि यदि सभी महात्मा नीरू माँ के चरण छूकर जाएँगे तो नीरू माँ को तकलीफ होगी, ऐसा सोचकर वे नीरू माँ के पास इस तरह बैठ गईं कि जिससे कोई भी उनके पैर न छूँ सके और दूर से ही "जय सच्चिदानंद" करके चले जाएँ।

दर्शन के दौरान दो-तीन व्यक्तियों ने कहा भी कि, "आप थोड़ा खिसक जाएँ ताकि हम नीरू माँ के दर्शन कर पाएँ।" तब भी वे बहन खिसक ही नहीं रही थीं। फिर से एक भाई ने खिसकने के लिए कहा, तो भी वे इस तरह से खिसकीं कि नीरू माँ के पैर तो नहीं ही छुए जा सकें। यह सब नीरू माँ देख रही थीं लेकिन वे कुछ नहीं बोलीं।

जन्म जयंती पूरी होने के बाद एक बार पूज्य नीरु माँ ने सभी ब्रह्मचारी बहनों को सत्संग के लिए बुलाया। सत्संग के दौरान पूज्य नीरू माँ ने जन्म जयंती के दर्शन के समय की लाइन के बारे में बातें शुरू की। नीरू माँ ने उन्ही ब्रह्मचारी बहन को इशारा करते हुए कहा, "यह क्या किया तुमने! महात्माओं को कितना दुःख हुआ होगा। तुम इस तरह बैठ गई थीं जैसे सब तुम्हारे दर्शन करने आए हों, वे लोग मेरे दर्शन करने आए थे, तुम्हारे दर्शन करने नहीं आए थे। इसके लिए बहुत सारे प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे, मालूम है तुम्हें!"

यह सुनकर उन्हें भीतर इतना खटकने लगा कि, "ओहोहो! मुझसे दूसरों को इतना अधिक दुःख हो गया! अब कभी भी दर्शन की लाइन की सेवा में मुझे जाना ही नहीं है। मुझ से इतना अधिक दुःख हो जाता है, पूज्य नीरू माँ को इससे कितनी तकलीफ हो जाती है। अब से नीरू माँ को जो अच्छा नहीं लगता वह मुझे नहीं करना है।" इस तरह बहन को पश्चाताप हो रहा था।

तभी नीरू माँ अंत में ऐसा एक वाक्य बोलीं कि, "इतनी ज्यादा भीड़ में ऐसे स्ट्रोंग व्यक्ति भी होने चाहिए।" यह सुनकर उन बहन के सभी नेगेटिव विचार बंद हो गए और उन्हें हिम्मत आ गई कि, मैं प्रतिक्रमण करूँगी और अब से ध्यान भी रखूँगी कि पूज्य नीरू माँ को तकलीफ न पड़े ऐसा ही करूँगी।

खामी और खूबी दोनों दिखाकर ज्ञानी कैसे सबको बैलेन्स में रखते हैं!

Akram Express

Augest 2013
Year : 1, Issue : 5
Conti. Issue No.:5

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
Posted at Adalaj Post office
on 8th of every month

पूज्यश्री के साथ NRI बच्चें

अक्रम एक्सप्रेस के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##**

अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

Printer, Publisher and Owner - Mr. Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Mr. Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, 5, Mamtapark Society, Bh. Navgujarat College,Usmanpura, Ahmedabad-14.